भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

कपास की खेती के लिए ४ से १० जनवरी, २०१५ साप्ताहिक सलाह

"परामर्श संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार परदिया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	साप्ताहिक सलाह
गुजरात, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र तथा कर्नाटक के कुछ क्षेत्रों में बॉलगार्डIIबीटी संकरों में गूलर की गुलाबी सूँडी की क्षति तथा इसकी क्षति दर्ज की गई है।	
उत्तरी कपास क्षेत्र	
उत्तरी कपास क्षेत्र में कपास चुनाई का कार्य पूरा हो चुका है	
उड़ीसा गुजरात मध्यप्रदेश महाराष्ट्र आंध्रप्रदेश तेलंगाना	फसल कपास चुनाई की अवस्था में है। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरो का इस्तेमाल न करें। कपास की अंतिम चुनाई के बाद कपास के डंठलों तथा फसल अवशेषों से कम्पोस्ट बनाएँ। फसल अपनी अवस्था में हैं। बीजी, बीजी II बीटी तथा गैर बीटी कपास में विशेषत: उन खेतों में जहाँ पिछली फसल मार्च/ अप्रैल, 2015 तक रखी गई थी , इनमें हरे गूलरों में नुकसान की निगरानी करते रहें। हरे गूलरों को प्रति एकड़ 20 से 50 की संख्या में खोलकर देखने पर 20% से अधिक में गुलाबी सूँडी का प्रकोप दर्ज होने पर तुरंत संश्लेषित फाइरेथ्राइड का फसल पर छिड़काव करें। ऐसा करने से हरे गूलरों में गुलाबी सूँडी नुकसान की रोकथाम होगी। गुलाबी सूँडी की रोकथाम के लिए उन खेतों में एक छिड़काव कर दें जहाँ प्रति पौधा 8-10 हरे गूलर अभी भी मौजूद हैं। पूरी तरह से प्रस्फुटित गूलरों से कपास चुनने के बाद ही कीटनाशक का छिड़काव करें। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि फसल को जनवरी में ही समाप्त कर दें। सिंचाई तथा उर्वरक देकर फसल कि अवधि को आगे न बढ़ाएँ क्योंकि देर से बनाने वाले गूलरों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप अत्याधिक होता हैं। पेड़ी तथा ग्रीष्मकालीन कपास की फसल लेने से बचें। ऐसा करना गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम करने तथा बीटी कपास के प्रति गूलर की सूँडियों में प्रतिरोधकता निर्माण रोकने के लिए आवश्यक है। कपास की चुनाई पूरी तरह से खुले गूलरों से प्रात: 10.00 बजे के बाद करें। पहली चुनी हुई कपास अलग भण्डारित करें तथा पहले सूखा कर कपड़े के साफ थैलों में भरकर रखें। बाजार में अच्छा भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनें। कपास चुनाई का कार्य जल्दी से जल्दी समाप्त करें। नाशीकीटों , रोगों के जीवनचक्र को खण्डित करने के लिए फसलचक्र अपनाएँ। जूट के बोरों का इस्तेमाल करने से बचें। इससे कपास संदूषित नहीं होगी। कपास की सुखी लकड़ियों तथा फसल अवशेषों तथा क्षतिग्रस्त बीजों का भण्डारण न करें। कपास का पुराना क्षतिग्रस्त बीज जो भण्डारण अथवा घरों में रखा है वह गुलाबी सूँडी के पतंगो का स्त्रोत का कार्य कर सकता है। क्षतिग्रस्त बीज को तुरंत नष्ट कर दें। अगली फसल में गूलर की गुलाबी सूँडी को जाने से रोकने के लिए खेत से फसल अवशेषों को निकालकर तुरंत नष्ट कर दें। फसल अवशेष को जलाने के स्थान पर इसका क्मपोस्ट बनाना बेहतर विकल्प है।

कर्नाटक	
धारवाड़, हवेरी, मैसूर	लगभग सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में कपास चुनाई का कार्य करीब पूरा हो चुका है। अच्छा भाव लेने के लिए बाजार में कपास भेजने से पहले कपास का ग्रेडिंग करें। सिंचाई द्वारा नई फलन बहार लेना कपास परिस्थितिकी तंत्र के लिए वांछनीय नहीं है। ऐसा करने से आगामी फसल में नाशीकीटों व रोगों का आगमन जल्दी होगा। कपास के डंठलों को जल्दी उखाड़ कर खेत को खाली कर दें जहाँ कपास की अंतिम चुनाई हो गई हो। इसके बाद अगेती दलहनी फसलें फसलचक्र में ले सकते हैं। देर से बोई गई देसी कपास की क़िस्मों *जी. हर्बेसियम* तथा *जी. आर्बोरियम* में दहिया रोग की रोकथाम के लिए कार्बेंदेजिम 50 डब्लू.पी. का @ 1.0 ग्रा./लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। उखाड़े गए कपास के डंठलों तथा अवशेषों को ईंधन के रूप में जलाने के स्थान पर कम्पोस्ट बनाएँ। कम्पोस्ट बनाने के लिए जीवाणु/ सूक्ष्मजीव संवर्धक समूह जैसे *फेनीरोचीट* जाति, *प्लुरोटस* जाति तथा *ट्राइकोडर्मा* जाति का इस्तेमाल किया जा सकता है।
तमिलनाडु	
पेरंबलुर, सलेम, त्रिची विरडुनगर	फसल परिपक्ववस्था में है। नाशीकीटों का प्रकोप नहीं है। कुछ खरपतवारों तथा जड़ गलन का प्रकोप दर्ज किया गया है जिसके लिए सिफ़ारिश किए गए उपाय किए गए हैं।

इस सप्ताह में सभी जिलों में वर्षा होने की संभावना नहीं है।(स्रोत :http://202.54.31.51/bias/service.php)

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डी-सूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. एन अनुराधा	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	09464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. (श्रीमति) सुनीत पंधर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	009814513681	suneet@pau.edu
डॉ. संजीव कुमार कटारिया	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, आरआरएस, भटिंडा (पंजाब)		k.sanjeev@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	09416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. ऋषिकुमार	सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)	09729106299	Rishipareek70@yahoo.in
डॉ. रूप सिंह मीना	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि	09413024080	rsmeenars@gmail.com

	विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान		
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	09437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	09662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. ऐ. एन. पसलवार	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	09822220272	adinathpaslawar@rediffmail.com
अरविंद डी. पंडागले	मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, नांदेड़ (महाराष्ट्र)	07588581713	arvindpandegale@yahoo.co.in
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	09406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	0949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. एम. वाय. अजयकुमार	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09880398690	dr.my.ajay@gmail.com
डॉ. एस. सोमासुंदरम	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर (तमिलनाडु)	09965948419	rainfed@yahoo.com
डॉ. एम. गुनसेकरण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कपास अनुसंधान संस्थान, श्रीविल्लीपुथुर (तमिलनाडु)	09443631359	gunasekaran.pbg@gmail.com

हिन्दी संसकरण:

डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)